P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सांस्कृतिक पर्यटन के सन्दर्भ में ''देवयानी तीर्थ'' एक ऐतिहासिक विश्लेषण

महिपाल यादव
शोधार्थी,
भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, भारत

सारांश

''सांस्कृतिक पर्यटन'' पर्यटन का ही एक रूप हैं। यह सांस्कृतिक आकर्षण में लोगों की ऐसी गतिशीलता हैं जो उन्हें उनके सामान्य निवास स्थान से अन्य स्थल पर ले जाती हैं जिसमें वे नवीन जानकारी और अनुभव एकत्र कर अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इस प्रकार तीर्थ स्थान (Pilgrimages) भी सांस्कृतिक पर्यटन की महत्वपूर्ण धरोहर होते हैं। यहां तीर्थ शब्द का अर्थ है जिसके द्वारा व्यक्ति पापादि से मुक्त हो जाता हैं। अतः जो स्थल व्यक्ति का आत्मिक एवं शारीरिक परिष्कार करने में समर्थ हैं, वे ''तीर्थ'' नाम से अभिहित होते हैं, जबकि ''तीर्थ'' का शब्दार्थ जोजलावता है यानि तीर्थ और जलाशय का अभिन्न संबंध हैं। हम देखते हैं कि भारत धार्मिक स्थानों का देश है। प्राचीन समय से ही यहां तीर्थाटन अर्थात धार्मिक–सांस्कृतिक पर्यटन की परम्परा रही हैं। इन तीर्थस्थानों में जहां एक ओर पौराणिक महत्व के तीर्थ विद्यमान हैं तो दूसरी ओर लोक आस्था के पावनधाम लोकतीर्थ भी युगों–युगों से प्राणी मात्र को शान्ति एवं सौख्य प्रदान करते आ रहे हैं। ''देवयानी तीर्थ'' जयपुर जिले के नरैना (नरायणा) से आगे जयपुर–जोधपुर लाईन पर फुलेरा स्टेशन से पाँच मील दूर देवयानी ग्राम में स्थित हैं। इस तीर्थ का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत शोध–पत्र में किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक पर्यटन, तीर्थाटन, पौराणिक।

प्रस्तावना

प्राचीन जयपुर जोधपुर राज्य की सीमा पर स्थित देवयानी तीर्थ की उत्पत्ति के संबंध में एक पौराणिक कथा इस प्रकार हैं –

देवयानी देव गुरु श्रीशुक्राचार्य की कन्या थी। उनका विवाह बृहस्पति के पुत्र कच के शापवश चन्द्रवंशी राजा श्री ययाति के साथ हुआ। उन्हीं से देवयानी के यदु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसके यदुवंश में भगवान् पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ने अवतार लिया।

मत्स्यपुराण, श्रीमद्भागवत एवं महाभारत में देवयानी एवं शर्मिष्ठा के परस्पर विवाद की कथा का वर्णन प्राप्त होता है। महाभारत के आदि पर्व में वर्णित है कि एक बार वन में घूमते हुए सरोवर पर स्नान करते हुए भूल से दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा ने शुक्र की कन्या का वस्त्र पहन लिया था। इस पर दोनों में विवाद हुआ तथा शर्मिष्ठा ने देवयानी को कुंए में फेंक दिया।[1] जब शुक्राचार्य अपनी पुत्री को ढूँढते हुए वन में आए तब पुत्री से सारा वृतान्त सुनकर उन्होंने वृषपर्वा से देवयानी को सन्तुष्ट करने एवं अनुचित व्यवहार हेतु शर्मिष्ठा को दण्ड देने का आग्रह किया। वृषपर्वा के मुँह माँगी वस्तु देने की प्रतिज्ञा करने पर देवयानी ने एक हजार कन्याओं के साथ शर्मिष्ठा के आजीवन अपनी दासी बन कर रहने के लिए उसके पिता वषपर्वा से माँग की। इस प्रकार शर्मिष्ठा ने देवयानी का दासीत्व स्वीकार किया।[2]

मत्स्य पुराण[3] के सत्ताइसवें अध्याय में भी इस कथानक का विवेचन किया गया है। कहते हैं जिस सरोवर में दोनों ने स्नान किया वर्तमान देवयानी तीर्थ वहीं है। श्री देवयानी माहात्म्य में वर्णित है कि यदु की माता देवयानी इस समय मत्स्य देश में तीर्थ रूप में विद्यमान है जो स्नान मात्र से मोक्ष प्रदान करती है, जिससे पापी मनुष्य भी दिव्यता को प्राप्त हो जाते हैं।

मत्स्यदेशे तीर्थरूपा स्नानात् मोक्षप्रदायिनी।
विद्यते तेन चादद्यापि पापिनो यान्ति दिव्यताम्।।[4]

विभिन्न तीर्थों पर जाकर भी जब द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को शान्ति नहीं मिली तो वह पुष्करस्थ अगस्त्याश्रम में अगस्त्य ऋषि के पास गया तथा अशान्ति का कारण पूछा। ऋषि ने कहा कि तुम ने ब्राह्मण धर्म त्याग कर क्षत्रिय धर्म स्वीकार किया तथा द्रोपदी के सुप्त पाँच पुत्रों को मारा। इस घोर पाप से तुम अशान्त मन हो। तुम्हें मैं गुप्त तीर्थ बताता हूँ। इस प्रकार ऋषि ने उन्हें शर्मिष्ठा सहित श्री देवयानी गुप्त तीर्थ का पता बताया। यह तीर्थ तीन योजन में फैले क्षार समुद्र के दक्षिणी तट पर कमलों से सुगन्धित मीठे जल वाला तीर्थ है। कलियुग में वहां स्नान करने वाला पापों से छूट जाता है। इसके देवयानी नामकरण का रहस्य का वर्णन देवयानी माहात्म्य में इस प्रकार किया है–

पापान्मोक्षं हरौ भक्तिं देवयानं सुखावहम्।
ददाति स्नानमात्रेण देवयानी समीरिता।।[5]

अर्थात् यह तीर्थ स्नानमात्र से पापमुक्त कर भगवद्भक्ति देता है, जिससे सुखों को प्रकट करने वाला देवयान मार्ग प्राप्त होता है, इसलिये इनका नाम देवयानी है। इसे स्नान मात्र से पापों को दूर कर स्त्रियों को सौभाग्य, धन, सम्पदा देकर उनका कल्याण करने वाली इसकी दासी शर्मिष्ठा तीर्थ कहा जाता है। श्रीकृष्ण की भक्ति में तत्पर होकर दोनों तीर्थों का स्नान करने से सब पापों से मुक्ति तथा परम गति प्राप्त होती है –

कुरूत शर्म्म नारीणां सौभाग्य–विभवादिकम्।
पापप्रक्षालनं स्नानच्छर्मिष्ठा सा प्रकीर्तिा।।
उभयोः स्नानमात्रेण कृष्णः भक्तियुतो भवेत्।
सर्वपापैः परित्यक्तः प्राप्नोति परमां गतिम्।।[6]

एक अन्य पौराणिक मत में इस तीर्थ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा गया कि प्राचीन काल में हैहयवंश का शाकम्भर राजा अपने कोढ़ से पीड़ित था। उसने अपने यहां आए जंगम नामक स्वामी से अपने इस कोढ़ से मुक्ति का उपाय पूछा। उसने देवों द्वारा निर्मित देवयानी कुण्ड में स्नान करने को कहा। राजा मार्ग में आए कुण्डों में स्नान करता देवयानी पर आया, वहां स्नान करने से उसको कोढ़ दूर हुआ, वह राजघाट कहलाया। वहाँ बैठकर उत्तराभिमुख हो उसने भगवान् वासुदेव की स्तुति की। उसे भगवान् ने प्रसन्न होकर कहा कि पापी भी देवयानी में स्नान करने से परमगति प्राप्त करते हैं। देवयानी के तटवर्ती वृक्ष, लता, गुल्म आदि सब भगवान् कृष्ण की आत्मारूपी तपस्वी ऋषि हैं। उनके सींचन से ऋषि पूजा का फल प्राप्त होता है।[7] यहां के जल–जीवों को अन्न देने वाला देवपूजा का फल पाता है। इस तीर्थ की प्रदक्षिणा करने से अश्वमेध का फल मिलता है। इसके बाद राजा ने देवयानी की स्तुति की। देवयानी ने प्रसन्न हो राजा को चारों दिशा में महादेव की स्थापना करने का आदेश दिया। देवयानी जहाँ प्रकट हुई, वह स्थान गंगाघाट कहलाया। देवयानी के आदेशानुसार राजा ने पूर्वतट पर श्री राजराजेश्वर, दक्षिण तट पर श्री गौरीशंकर, पश्चिम में यज्ञेश्वर एवं उत्तर में श्री नीलकण्ठ नाम से शंकर की स्थापना की।

अश्वत्थामा ने इस तीर्थ पर आकर वैशाख शुक्ल एकादशी को स्नान कर पाँच दिन तक निराहार रहते हुए भगवान् का स्मरण किया। भगवान् श्री कृष्ण ने उसे पापमुक्ति का वर दिया। तब अश्वत्थामा ने प्रसन्न होकर गुप्त पापों का नाश करने वाले श्री गुप्तेश्वर शिव की स्थापना देवयानी के पूर्व तट पर की तथा दक्षिण में अपने नाम से शिवमूर्ति की स्थापना की।[8]

इस प्रकार यह देवयानी पौराणिक तीथ है। सब तीर्थों में कृत पाप यहां नष्ट होते हैं किन्तु यहां किया पाप वज्रलेपवत् हो जाता है। इस तीर्थ के सेवन से भगवान् वासुदेव प्रसन्न होते हैं। इस तीर्थ के विषय में लोक में एक कहावत प्रचलित है – ''सब देवों की नानी देवयानी''

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य देवयानी तीर्थ के पौराणिक महत्व के बारे में बताना तथा सांस्कृतिक पर्यटन के संदर्भ में इस तीर्थ की भूमिका का मूल्यांकन करना है।

निष्कर्ष

श्री देवयानी के तट पर स्थित मन्दिरों के दर्शन कर आज भी मानव पुण्यार्जन करता है। पाँच हजार वर्ष से वैशाख पूर्णिमा को इस तीर्थ पर विशाल स्नान पर्व का आयोजन होता है। इस अवसर पर दूर–दूर के हजारों यात्री तीर्थ स्नान देवदर्शन दान–पुण्य कर अपने पापों से छुटकारा पाते हैं। सन्ध्या समय सांभर में दैत्यराज हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रहलाद व नृसिंह अवतार लीला का दर्शन कर अपने को कृतकृत्य मानते हैं।

यह तीर्थ हिन्दू धर्म की प्रत्येक जाति के धार्मिक आस्था का केन्द्र हैं। विशेष अवसरों पर इस क्षेत्र की संस्कृति के दर्शन भी इस तीर्थ पर हो जाते हैं, जिनमें लोक आस्थाऐं, लोक संस्कृति एवं उत्सव प्रियता की भावना आदि प्रमुख है। यह तीर्थ हमारी पाराणिक संस्कृति को सहेजने में भी महत्ती भूमिका निभा रहा है। इस तीर्थ पर आकर लोग दान, परोपकार एवं सद्भाव के मूल्यों को बढ़ाते है। आज यह तीर्थ धार्मिक पर्यटन का महत्वपूर्ण केन्द्र बनने की क्षमता रखता है।

सुझाव

1. ''देवयानी'' महत्वपूर्ण तीर्थस्थल होने के उपरान्त भी यहां अपेक्षित तीर्थयात्री नहीं आते हैं। इसके दो महत्वपूर्ण कारण निम्न हैं – (1) स्थानीय निवासियों के अतिरिक्त इस पौराणिक महत्त्व के तीर्थ के बारे में लोगों को जानकारी का अभाव हैं। (2) यहां पर्याप्त मात्रा में आधारिक संरचना यथा पेयजल, होटल आदि का विकास नहीं हो पाया है।
2. देवयानी तीर्थ पर अनेक पौराणिक मन्दिरों की भरमार हैं, जिनके सार–संभाल यथा पूजा अर्चना,

धार्मिक क्रिया–कलाप, संरक्षण के लिये स्थानीय लोगों की प्रबन्ध कमेटी की व्यवस्था आवश्यक हैं।

3. वैशाख मास की पूर्णिमा को आयोजित विशाल स्नान पर्व के अवसर पर हजारों तीर्थ यात्री यहां धार्मिक स्नान, पूजा–अर्चना, दान आदि के लिये आते हैं। इस अवसर पर बड़ा मेला लगता हैं। मेले के व्यवस्थित प्रबंधन के लिये इस मेले को भी राज्य मेला प्राधिकरण में शामिल किया जाना चाहिऐ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सक्सेना, शालिनी, राजस्थान के लोकतीर्थ, प्रकाशक श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2001.

शर्मा, सी.एल., मत्स्य संघ का पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक इतिहास, मालती प्रकाशन, जयपुर, 1993.

Richards, Greg : What is Culture Tourism, 2003 – www.acatemia.edu.

www.yojana.gov.in

अंत टिप्पणी

1. *महाभारत आदि पर्व, 78/8, पृ.13.*
2. *महाभारत आदि पर्व, 80/9, पृ.26.*
3. *मत्स्यपुराण, अध्याय 27–29, प्रकाशक मेहरचन्द लक्ष्मणदास, नई दिल्ली।*
4. *देवयानी महात्म्यम्, अध्याय–1, श्लोक–5, पृ.5, प्रकाशक सिंघानीया उद्योग प्रबंधन, वरली नाका, बम्बई।*
5. *देवयानी महात्म्य, 2/6, पृ.12.*
6. *वही 2/7–8, पृ.12.*
7. *वही 2/35*
8. *वही 3/28–32, पृ.30.*